



भारत का भू-राजनीतिक दृष्टिकोण

सुजन विनाय

पूर्व राजदूत एवं महानिदेशक मनोहर पर्रिकर इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, नई दिल्ली।
ईमेल: dg.idsa@nic.in

भारत की विदेश नीति गतिशील है और धर्म (कर्तव्य) तथा वसुधैव कुटुंबकम (विश्व एक परिवार) के विशिष्ट भारतीय सभ्यतागत परिवेश पर आधारित है। भारत के बारे में यह दावा निश्चय ही पूरी तरह प्रमाणित कहा जा सकता है। भारत उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम विभाजन को पाटने की क्षमता के साथ वैश्विक दक्षिण की एक विश्वसनीय आवाज बनकर उभरा है। शांति बनाए रखने, युद्धों को रोकने या संघर्षों को शीघ्र समाप्त करने में बहुपक्षीय आदेश की विफलता के कारण मजबूत द्विपक्षीय साझेदारी और मिनी-पाश्व समूहों के माध्यम से बहु-संरेखण और बचाव की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला है। इसके स्पष्ट दोषों के बावजूद, एक नई वैश्विक व्यवस्था को व्यवस्थित करना आवश्यक नहीं है। एक मौलिक पुनर्व्यवस्था से, अभी तक अनदेखे पैमाने पर युद्ध और तबाही का अनुमान लगाया जा सकता है। अनिश्चितताएं जारी रहने के बावजूद, भारत 2025 में अपनी बाहरी गतिविधियों में अधिक आत्मविश्वास के साथ प्रवेश करेगा।

अं

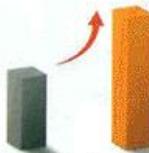
तरराष्ट्रीय संबंध एक निर्णायक मोड़ पर खड़े हैं। संयुक्त राष्ट्र और ब्रेटन वुड्स द्वारा प्रस्तुत बहुपक्षीय व्यवस्था, शक्ति संतुलन में बदलाव की उभरती आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाई है। वैश्विक समुदाय आज संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के गतिरोध का सामना कर रहा है, जिसमें प्रमुख शक्तियां एक-दूसरे के खिलाफ खड़ी हैं।

शांति बनाए रखने, युद्धों को रोकने या संघर्षों को शीघ्र समाप्त करने में बहुपक्षीय आदेश की विफलता ने मजबूत द्विपक्षीय साझेदारी और मिनी-पाश्व समूहों के माध्यम से बहु-संरेखण और बचाव की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया है। वैश्वीकरण 2.0 में, क्षेत्रीय और मध्य शक्तियां रणनीतिक स्वायत्ता, बहु-संरेखण और प्रतिस्पर्धी शक्तियों के साथ मुद्दा-आधारित

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता

रक्षा क्षेत्र के नियात में ऊंची छलांग

- वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में रक्षा नियात में पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 77 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि।



- 2014-15 में 1,941 करोड़ रुपये मूल्य के नियात से दस गुना वृद्धि होकर 2023-24 में 21,083 करोड़ रुपये।
- 100 से अधिक देशों को नियात।



साझेदारी के माध्यम से अधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त कर रही हैं।

भारत, एक जिम्मेदार प्रमुख शक्ति के सभी गुणों से संपन्न होने के बावजूद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य नहीं है। यह दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला लोकतंत्र है, इसे शांति स्थापना अभियानों में योगदान के साथ-साथ दुनिया भर के देशों को महामारी के दौरान वैक्सीन सहायता के लिए सम्मान मिला है। दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती एक बड़ी अर्थव्यवस्था होने के साथ, भारत कई लोगों के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में उभरा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अक्सर भारत के दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं- (1) तीव्र तथा समावेशी आर्थिक विकास और सामाजिक सूचकांकों तथा महिला-पुरुष समानता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना, (2) संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए भारत की रक्षा तथा सुरक्षा क्षमताओं को मजबूत करना, एक स्थिर परिधि बनाए रखना, सीमा बुनियादी ढांचे का निर्माण करना तथा भारत के दूरदराज के हिस्सों में विकास को बढ़ावा देना और (3) भारत की उत्पादकता तथा विनिर्माण क्षमताओं में सुधार करने और भारत को वैश्विक मूल्य शृंखलाओं (जीवीसी) में खुद को बेहतर ढंग से एकीकृत करने में सक्षम बनाने के लिए, विशेष रूप से महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों में भागीदार देशों के साथ सहयोग करना।

यह दृष्टिकोण भारत के उच्च विकास पथ को सुविधाजनक बनाने के लिए तीन अलग-अलग स्तरों- आंतरिक, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर आम सहमति विकसित करने पर आधारित है। भारत की विदेश नीति के कई सहायक पहलू, जैसे अंतरराष्ट्रीय समुदाय को शामिल करने के लिए घरेलू आयोजनों

का उपयोग, जैसा कि वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन में स्पष्ट है, इसकी पड़ोसी प्रथम की नीति और इसकी वैश्विक पहल, जैसे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन और आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन, तालमेल, अभिसरण और सद्भाव बनाने के लिए अपने सभ्यतागत आवेग से प्रवाहित होती हैं।

भारत की जी-20 की अध्यक्षता उसके बाहरी जुड़ाव में एक महत्वपूर्ण क्षण था। यह कई प्रमुख संघर्षों और विरोधाभासों के साथ मेल खाता है। 2023 तक, यूक्रेन में चले लंबे युद्ध की राजनीति, महामारी की उत्पत्ति से आगे निकल गई है जिसने जी20 प्रक्रिया को बर्बाद करने का खतरा पैदा कर दिया। 2020 में गलवान में हुई खूनी घटना के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारत और चीन एक-दूसरे के खिलाफ थे। इसके अलावा अक्टूबर, 2023 में इजराइल पर हमास के हमलों और उसके प्रतिशोध के साथ गाजा को कठोर दंड मिला। सभी बाधाओं के बावजूद, भारत ने एक सर्वसम्मत दस्तावेज के साथ जी20 की अध्यक्षता सफलतापूर्वक संपन्न की, जिसने असंभावित खिलाड़ियों को आर्थिक विकास और संयुक्त राष्ट्र के 2030 तक के सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपनी ऊर्जा समर्पित करने के लिए एक साझा मंच पर ला दिया। भारत अपनी जी-20 अध्यक्षता के दौरान प्रमुख विकासात्मक चुनौतियों पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान वापस लाने में सफल रहा। भारत ने स्वास्थ्य सेवाओं, आपदा

 सेवा, सुशासन और
गरीब कल्याण
वर्ष

भारत विश्व की फार्मेसी

वैक्सीन मैत्री

 पीपीई किट, मास्क और हैंड सैनिटाइजर का
शीर्ष नियातिक।

 100 देशों को 29 करोड़ से अधिक टीके की
आपूर्ति की गई।

स्रोत: विदेश मंत्रालय



सबसे पहले, स्वतंत्र प्रकृति के मंचों को मजबूत और विस्तारित करना है। उसके बाद विभिन्न क्षेत्रों में विकल्पों को व्यापक बनाकर और उन पर अनावश्यक निर्भरता को कम करना है, जिनसे लाभ मिल सकता है। वास्तव में ये वही मुद्दे हैं, जहां ब्रिक्स वैश्वक दक्षिण के लिए एक बदलाव ला सकता है।

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर
ब्रिक्स आउटरीच सत्र में



प्रबंधन, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और कई अन्य क्षेत्रों में अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को वैश्वक दक्षिण के देशों के साथ साझा करने की इच्छा व्यक्त की है।

कोई भी यह दावा कर सकता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति बहुत प्रभावशाली है, उनकी व्यक्तिगत ऊर्जा और दूरदर्शिता से प्रेरित है, और धर्म (कर्तव्य) तथा वसुधैव कुटुंबकम (विश्व एक परिवार) के विशिष्ट भारतीय सभ्यतागत परिवेश पर आधारित है। भारत उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम विभाजन को दूर करने की क्षमता के साथ वैश्वक दक्षिण की एक विश्वसनीय आवाज के रूप में उभरा है। क्रमशः जुलाई और सितंबर, 2024 में मास्को और कीव की प्रधानमंत्री मोदी की यात्राओं ने एक ऐसे देश के रूप में भारत की छवि को रेखांकित किया है जो शांति के लिए खड़ा है। रूस और यूक्रेन दोनों देशों की यात्रा के दौरान उनका संदेश एक समान था, कि यह युद्ध का युग नहीं है, समाधान युद्ध के मैदान में नहीं पाया जा सकता है, और मतभेदों को बातचीत और कूटनीति के माध्यम से हल किया जाना चाहिए।

वास्तव में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया को वास्तव में किंतुगी क्षण प्रदान किया है। यदि यूक्रेन और गाजा में लंबे युद्धों को बातचीत के माध्यम से हल किया जा सकता है, तो भू-राजनीतिक दरारें समय के साथ ठीक हो सकती हैं और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को हमारे समय की तत्काल चुनौतियों, विशेष रूप से आर्थिक सुधार और जलवायु कार्रवाई पर अपनी ऊर्जा केंद्रित करने में सक्षम बनाया जा सकता है। कहावत है कि भारत का ज्ञान सोने की उस नस की तरह है जो वैश्वक सर्वसम्मति के किंतुगी से होकर गुजरती है, जो इसे और अधिक लचीला बनाती है।

2024 ने कई मोर्चों पर भारत की ताकत की परीक्षा ली है। सीमा क्षेत्रों में कुछ घर्षण बिंदुओं पर चीन के साथ मतभेद बरकरार रहे, जबकि विदेश मंत्रालयों और सशस्त्र बलों के स्तर पर बातचीत जारी रही। अंततः, भारत के धैर्य, दृढ़ता और दृढ़ रुख से, बातचीत में और जमीनी स्थिति दोनों में स्थिति में बदलाव आया। जून 2020 में गलवान में हुई घटना से पहले की तरह वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गश्त बहाल करने का सफल समझौता एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। सशस्त्र बल अब बनी नई समझ का जायजा लेंगे और चरण-दर-चरण तरीके से उनके कार्यान्वयन की पुष्टि करेंगे। उन्हें मौजूदा प्रोटोकॉल और विश्वास निर्माण उपायों (सीबीएम) की समीक्षा करने और उन कमजोरियों को दूर करने का भी अवसर मिलेगा जिनके कारण झड़पें हुईं। सभी बाधाओं के बावजूद चीन के साथ गतिरोध को दूर करने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की क्षमता एक और संकेत है कि जब विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की हिमायत की बात आती है तो भारत भी 'बातचीत पर चलने' में सक्षम है।

स्पष्ट रूप से, तनाव में कमी और यथास्थिति की बहाली ने कजान में हालिया ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच हालिया बैठक का मार्ग प्रशस्त किया। भारत और चीन के बीच उच्च स्तरीय बातचीत की बहाली से दोनों पक्षों द्वारा अन्य क्षेत्रों में द्विपक्षीय जुड़ाव फिर से शुरू करने के लिए अगले कदमों पर काम करने की संभावना भी खुल गई है। कई मुद्दों में दोनों देशों के बीच सीधी उड़ान, पत्रकारों की तैनाती, पर्यटन तथा उद्यमियों के लिए वीजा व्यवस्था और अधिक मौलिक रूप से भारत के आत्मनिर्भर भारत निर्माण में चीनी प्रौद्योगिकियों और आपूर्ति श्रृंखलाओं की भविष्य की भूमिका का सवाल शामिल है।



भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान, ईसीएसडब्ल्यूजी ने जलवायु और पर्यावरण के मामलों पर सफलतापूर्वक आम सहमति बनाई। भारत की अध्यक्षता में अब तक की सबसे लंबी वार्ताओं में से एक, जिसकी सफलता दर 95% पर सहमति थी।



वसुधैव कुटुम्बकम्
एक पृथ्वी • एक परिवार • एक भविष्य



پاکستان کی آتائکواد سے دُر رہنے کی انیچھا کے کارণ پاکستان کے ساتھ بھارت کے سंबंध س्थیر اور پ्रتیکूل بنے ہوئے ہیں۔ کنڈریشاسیت پرداش جممو اور کشمیر میں لوکتاً تریک چوناواں نے کشہر کے ویکاپس میں اک نیا ادھیا خوں دیا ہے، بھارتی سانیڈھان کے انوچھے 370 کو جممو۔ کشمیر ویکھانسما میں اسکی بھالی کی مانگ کرنے والے اک پرسناو کے پاریت ہونے کے باوچوں دیتھا س میں دُر کر دیا گیا ہے۔

یہی پاکستان آتائکواد کا ٹپیوگ دے ش کی نیتی کے سادھن کے روپ میں کرنے سے بچتا ہے، تو اس بھان کو ارث دے نا ابھی بھی سبھا ہے کی بھارت اور پاکستان کو اتیت کو دفنا نا چاہیے اور اچھے پڈوسیوں کے روپ میں اک ساتھ رہنا چاہیے۔ بھلے ہی پرداشانمتری مودی کی سرکار نے آتائکواد کے پریت ‘شُون्य سانھنچا’ کی دُر نیتی اپنائی ہے اور باتھیت کی بھالی کو پاکستان کے ویکھا میں بدلاب سے جوڈا ہے، اس نے پاکستان کے لیے بھارت اور دکشیان اشیا کے انی راٹھوں کے ساتھ میلکر بہتھر نیتی کا اہساس کرنے کا دروازا بھی خولنا رکھا ہے۔

بھارت کی پڈوسی پرथم نیتی کا ٹدے ش ویکھا کشہر میں ارثیک ویکاپس اور سامدھی کو بढ़اوا دے نا ہے۔ سما میں ساتھ پڈوسی دے شوں میں پریکھن انپریھا ہے جو عنکی پریکھتیوں سے پریت ویکھا پرداشانیک، ارثیک اور ساما جیک گتیشیلتا کا پریانام ہے۔ وے نی اور اکسرا اپرطیا شیت چوناٹیا سامنے لائے گے جیسے ٹھیک تریک سے نیپٹنا ہوگا۔

اکتوبر، 2024 میں مالدیو کے راٹھپتی میڈجھ کی بھارت یاترا کے باو مالدیو کے ساتھ بھارت کے سانبندھ فیر سے بہتھر سیتھی میں آ گا ہے۔ مالدیو اور ویکھانیک پڈوس میں انی جگہوں پر، بونیا دی ڈانچے، کنے کیتھیتی اور کھمتا نیما ن کے لیے بھارتی ویکلپ، انی ویکلپوں کی تولنا میں جوڑ پکड رہا ہے۔ بانگلا دے ش میں راجنیتیک ٹھلپ-پوٹھل چیتھ کا کارن ہے، ویکھا رूپ سے ہندو الپس سانخکوں کے ساتھ ویکھا اور کٹھرپنھ تھا آگے سیما پار فلاب کی سانبھا ونا۔ بھارت کی سان وے دن شیل تا اؤں پر دھان دے نا بانگلا دے ش کے ہیت میں ہے، جیسے گے ای ویڈ پر واس اور پورن تھر میں بھارت کے سامنے آنے والی آنٹریک سرکھا چوناٹیا بھی شامیل ہے۔

سیتمبر، 2024 میں سانبکت راٹھ میں آیوے جیت ‘भیکھ کے شیخوں ساممیلنا’ میں اپنی تیپنی میں پرداشانمتری مودی کے ‘عجھل ویکھاک بھیکھ کے لیے ہماری ساموھیک خوچ میں اک مانو-کوئنھیت ڈھنکوئ’ پر جوڑ دے نے سے ٹھمید ہے کی ویکھا ستر پر ادھیک آتمنی ریکھن کو بढ़اوا میلے گا۔ بھوپکھی سانچنا اؤں، ویکھاکر سانبکت راٹھ سرکھا پریشان میں ای ویکھا، ترکس سانگت نہیں ہے۔ ورچسخ کی راجنیتی کو

آج چوڑے سے چوڑے راٹھ بھی خاریج کر رہے ہیں۔ مانمانی اور جباردستی کے لیے پریتھم کا نیما ن آవشیک ہے، لئکن یہ راٹھوں کو ویکا ساتھ لکھیوں سے بھٹکاتا ہے۔

یہاکے سپاٹ دوشاوں کے باوچوں، اک نی ویکھاک ویکھا کے ویکھا سیتھ کرنا آవشیک نہیں ہے۔ اک مولیک پونریکھا سے ابھی تک اندرے پے پے میں پر یوڈھ اور تباہی کا انومان لگایا جا سکتا ہے۔ یہ ویجتھا اؤں اور پرائیت کے اک نی ساموھ کو جنم دے سکتا ہے، جیسا کی 1945 میں دیتھیک ویکھ یوڈھ کے باو سانبکت راٹھ کی سانپانا کے سما ہو آ ہا۔ یہی دوپیا سانبکت راٹھ اور یہ سے سانبکھ بھوپکھی سانسخانوں میں واسخاک سوڈھاوں کے لیے بھارت کے آہوان پر دھان دے، تو ماؤچوں نیم آدھاریت انتر راٹھیک ویکھا (آر بی آر ای ای) کو ادھیک سوکھا کیتھا میل سکتا ہے اور یہ سامکالیں چوناٹیا کا سامنہ کرنے میں ادھیک پریمی اور سکتا ہے۔

سانبکت راجھ امریکا میں نی راٹھپتی کے پد پر ڈونالڈ ترمپ کا نیروں چن بھارت کے لیے نی اکسرا اور کوچ چوناٹیا لئکر آए گا۔ اچھی بات یہ ہے کی راٹھپتی ترمپ اور پرداشانمتری نرمند مودی کے بیچ بھوپکھ اچھا تالمیل ہے، جو دوں دے شوں کے بیچ ریشتے کے لیے اچھا سانکھت ہے۔ راٹھپتی ترمپ کے پیچھے کارکال کو دھکتے ہے، آتائکواد، مہتھپورن آپورتی شرخلا اور ہند-پرشاٹ کشہر میں ویکھا سانھت پرمخ سرکھا چوناٹیا پر دوں دے شوں کے بیچ اک رلپت ہے۔ یہ سامکھری کے اور ادھیک گھرہ ہونے کی سانبھا ونا ہے۔ دوسری اور، بھارت کو اپنے نیتیت پر شوک لگانے اور امریکی ٹپیادوں کے لیے شوک کم کرنے کی مانگ پر کیسی بھی نی فوکس کو ساوھانی سے تالنہ ہوگا۔ اچھی بیچ اور سخن امریکی آکھان نیتیا کے سوال پر کوچ ہنگامہ ہونا تھا ہے۔ ساٹھ ساٹھ بلوں اور رکھا سانھوگ کے بیچ سانبکت ایکھا اچھی ترہ سے سامکھت پریت ہوتا ہے اور راجنیتیک ساٹھے داری کے لیے آدھار پرداش کرتا رہے گا۔ یہی راٹھپتی ترمپ یوکرے اور گا جا میں یوڈھ سامپاٹ کرنے میں سफل ہو جاتے ہے، تو یہ بھارت کو پریتھمی دلوں کے سامنے اپنی ‘راجنیتیک سویا تھا’ کے ٹھیک ٹھرہانے کے بوجھ سے مुکت کر دے گا۔

انیشیتھا ای جاری ہونے کے باوچوں، بھارت اپنی بھاری گتی ویکھیا میں ادھیک آتمنی ویکھا س کے ساتھ 2025 میں پریم کرے گا۔ بھارت کی گتیشیل اور ویکھاکر ویکھا نیتی ویکھاک مانچ پر اسکے بھوکھے کد میں مہتھپورن بھوپکھا نیمیا ہے۔ پرمخ راجنیتیک ساٹھے داروں، ویکھاکر امریکا کے ساتھ میلکر کام کرنے، جبکہ پڈوسیا، ویکھاکر چین کے ساتھ سیتھ سانبندھ بنا اے رکھنا، اس نیتی کے کوئن میں ہے۔ □

(لے خ میں ویکھاکر ویکھاک کے نیجی ہے)